43 Part II Hons.
P. III A

Que 10.- Trace the main stages in the growth and development of Skt. Language and literature in South in South East Asia.

Ans —— भारत बहुत ही प्राचीन समय से अपनी सभ्यता और संस्कृति के लिए जगत प्रसिद्ध है। यहाँ ऐसे साहित्यों तथा वेदान्तों की रचना हुई जिसमें संसार के ज्ञान के सार पड़े हैं। वेद जो संस्कृत भाषा में लिखी गयी है, संसार की सबसे पुरानी भाषा मानी जाती है। संस्कृत भाषा में (को हम भारतवासी देववाणी) देव भाषा भी कहते हैं। इस संस्कृत भाषा में असंख्य ग्रंथों की रचना हुई है जो भारत में सदियों तक लोगों की भाषा रही। यह बात बहुत ही गौरव की है कि संस्कृत भाषा तथा इसकी सीमा भारत के अन्दर तक ही सीमित न रहकर इसके संसर्ग में आये दूर सभी देशों में फैल गयी। भारतीय व्यापारी तथा धर्म प्रचारकों ने व्यापार के साथ-साथ धर्म कला, तथा संस्कृत साहित्य को भी वृहत्तर भारत में उच्चस्तर पर पहुँचा दिया। वहाँ के लोग भी भारतीय सभ्यता संस्कृति तथा कला के साथ-साथ संस्कृत भाषा में भी रुचि दिखलाई जब हम वहाँ के काव्य तथा छन्द की छटा को देखते हैं तो उसे पूर्ण तथा भारतीय पाते हैं।

संस्कृत भाषा और साहित्य ने संसार में एक नई सभ्यता को जन्म दिया। दक्षिण-पूर्वी एशिया में बहुत ही अधिक संख्याओं में शिलालेखों पाये गये हैं जो सुन्दर संस्कृत काव्य छटा में लिखी गयी है। इस शिलालेखों को देखने से पता चलता है कि इसके लिखने वाले पूर्णतया संस्कृत काव्य तथा तथा उसके छंद की छटा से परिचित थे।

दूसरी तथा तीसरी शताब्दी में लिखी हुई शिलालेख जो हाल ही में चम्पा में प्राप्त हुआ है वो वोचाम शिलालेख के नाम से जाना जाता है। यह शिलालेख वोचाम नामक स्थान में पाया गया है इसलिए इसे वोचाम शिलालेख कहा जाता है। यह

यह शिलालेख संस्कृत, संस्कृत भाषा तथा साहित्य का दक्षिण पूर्व एशिया में विकास के लिए एक महान स्रोत का आधार है। इस शिलालेख से यह साफ झलकता है कि दक्षिण पूर्व एशिया में कब और कैसे संस्कृत का स्वरूप था। यह सरल शिलालेख सरल संस्कृत भाषा में वसन्त तिलक काव्य छंद में लिखी हुई है। जो कि सरल काव्य छटा का परिचायक है। चम्पा के शम्भुवर्मन का शिलालेख जो उन्नतिशील संस्कृत काव्य छटा का प्रतिनिधित्व करता है उसका छंद काव्य शैली, संस्कृत भाषा के लिए एक ऊँचा आदर्श प्रस्तुत करता है।

यूनान की सबसे पुरानी शिलालेख जो पाँचवी शताब्दी में पद्य शैली में लिखी गयी है, उसमें पाँच पद्य की पंक्तियाँ हैं, जिसमें चार पद्य की पंक्तियाँ "सार्दूल विक्रत छन्द" में लिखी गयी है। एक पंक्ति "हिन्दू मैथोलोजी के प्रचार के विषय में बतलाया है।

इन शिलालेखों के अलावा बहुत से विभिन्न शिलालेख पाये गये हैं जैसे बर्मा, श्याम, मलयपेनिन सुला सुमात्रा जावा और बालि जो क्रमशः चौथी तथा सातवीं शताब्दी की लिखी हो सकती है। इन सभी देशों में खोजे गये शिलालेखों के गणवेषण से पता चलता है कि वहाँ के लोगों को संस्कृत भाषा तथा साहित्य का अच्छा ज्ञान था। साहित्य में छन्द का स्थान महत्वपूर्ण होता है, जो दक्षिणी पूर्वी एशिया के लोग छन्द की शुद्धता से अच्छी तरह परिचित थे।

छठी सदी से ११वीं सदी शताब्दी तक दक्षिणी-पूर्व एशिया में संस्कृत भाषा के इतिहास में एक अध्याय की शुरुआत हुई थी। चंपा का राज्य कोई बड़ा राज्य नहीं था फिर भी लगभग ५० से अधिक शिलालेख जो गद्य तथा पद्य में है तथा पुष्पित छंद शैली में लिखी गयी है जो उस समय भारतवर्ष में प्रचलित थी ये सभी शिलालेख उन सूदूर देश में साहित्य की उद्भव तथा विकास की कहानी कहता

कम्बुज देश में जहाँ तक संस्कृत भाषा के विकास का प्रश्न है वहाँ पर 150 संस्कृत शिलालेख की प्राप्ति हुई है जो संस्कृत भाषा के लिए आश्चर्यजनक बात है ये सभी शिलालेख अच्छे-अच्छे विद्वानों द्वारा प्रसरित की गयी थी। इन सब शिलालेखों की काव्य शैली को देखने से पता चलता है कि प्रशस्ति पर संस्कृत भाषा तथा साहित्य के सर्वांगीन ज्ञाता थे। इन सभी शिलालेखों में बहुत से शिलालेख पुष्पित काव्य शैली में लिखी गयी है। कुछ शिलालेख बड़े भी है कुछ छोटे हैं।

यशोवर्मन के शिलालेख में 50 पद्य की पंक्तियाँ है। काम्बुज में ही दूसरा शिलालेख जिसमें 108 पंक्तियाँ हैं। एक तीसरी शिलालेख में 93 पंक्तियाँ हैं। ये सभी पंक्तियाँ सुन्दर तथा विशिष्ट काव्य शैली में लिखी गयी है। इन सभी शिलालेखों में प्रशस्तिकारों ने यशोवर्मन के गुण तथा उसकी कीर्ति के बारे में प्रशस्ति दी है।

राजेन्द्रवर्मन ने अपने शिलालेखों को यशोवर्मन के शिलालेख से अधिक बड़ा किया तथा उसमें अधिक संख्याओं में पद्य की पंक्तियाँ लिखी गयी जैसे <u>मेबॅक का शिलालेख राजेन्द्रवर्मन का ही है</u>। उसमें 118 गद्य की पंक्तियाँ शारदूल विक्रत छंद तथा स्त्रग्धरा में लिखी गयी है।

राजेन्द्र वर्मन के रूप शिलालेख जिसमें 298 पद्य की पंक्तियाँ है सबसे बड़ा शिलालेख माना जाता है। इन सभी शिलालेखों की विशेषताएँ हैं कि सभी संस्कृत काव्यशैली में लिखी गयी है तथा हमारी प्राचीन संस्कृत के समानान्तर में आती है। इन सभी शिलालेखों के अध्ययन से यह पता चलता है कि दक्षिण पूर्व एशिया के लोग संस्कृत के प्रचलित नियम तथा परम्पराओं जैसे प्रत्युत्तर तथा छंद विचार आदि के नियम से पूर्ण परीचित थे।

इस तरह दक्षिण पूर्वी एशिया के इन

शिलालेखों की प्रशस्ति को देखने से पता चलता है कि उन्हें सभी भारतीय, काव्य, पुराण, दर्शन, माइथोलोजी (धार्मिक विचारधारा) तथा अध्यात्मिक एवं विषयों का अच्छा ज्ञान था। वे केवल अध्यात्मक विचार धाराओं से ही नहीं परिचित थे बल्कि धार्मिक देवी, देवताओं तथा उनके विशेषताओं से परिचित थे। यशोवर्मन तथा जयवर्मन II पाणिनी के व्याकरण के नियम तथा सूत्रों आदि से पूर्णतया परिचित थे। उसने अपनी प्रशस्ति में उन सूत्रों के आधार पर संस्कृत की बहुत से पद्य पंक्तियों को अंकित करवाया।

इन सुदूर-पूर्व देशों में जितनी प्रशस्तियाँ में पायी जाती है उनमें बहुतायत शिलालेख संस्कृत के मुख्य तकनीकि विभाग के विषय में भी उद्धरण प्रस्तुत करते हैं। जब हम इन शिलालेखों की सूक्ष्मता पर विचार करते हैं तो आश्चर्य की सीमा नहीं रहती है कि छोटे-से छोटे विषय तथा बड़ी से बड़ी बातों का भी इसमें विचार किया गया है। प्रवरसेन तथा मयूर का नाम भी सेतुबोध तथा सूर्यशतक के लेखक के रूप में आता है तथा गुणाढ्याय जो प्राकृत भाषा के सबसे बड़े लेखक थे उनका नाम भी इन सभी प्रशस्तियों में उद्धृत है। इतना ही नहीं प्रे. रूप शिलालेख में कालिदास तथा उनके रघुवंश को नहीं भूला। यशोवर्मन के प्रशस्ति लेख में भारवी का नाम, मथुरा के राजा शूरसेन तथा उसके प्रत्याशी राजा विदर्भ के मित्यक का नाम भी सभी शिलालेखों में आया है। ये सभी काव्य तथा इसके लेखक पूर्णतया भारतीय हैं इनकी भाषा संस्कृत ही है। इससे हम जान सकते हैं कि उन दूर देशों में भी संस्कृत भाषा का माध्यम अध्ययन अध्यापक होता था तथा संस्कृत साहित्य उन्नति पर थी लोग व्याकरण के सूत्रों तथा उसके नियमों को उच्च स्थान देते थे। पाणिनी के अष्टाध्यायी और पातंजलि के महाभाष्य का नाम इन सभी सुदूर पूर्व के शिलालेखों में उद्धृत है। ऐसा कहा जाता है कि यशोवर्मन

ने भी महाकाव्य पर एक टीका लिखा है था, उसका मंत्री भी होरा शास्त्र तथा ज्योतिष का बहुत बड़ा ज्ञाता था। वात्सायन का कामसूत्र विशालाक्ष का नीति शास्त्र और संहिता का नाम भी उन शिलालेखों में उद्धृत किया गया है।

वेद वेदान्त स्मृति का महाकाव्य कुछ साहित्य, जैन साहित्य, प्राकृत, धार्मिक, सम्प्रदाय तथा भारतीय दर्शन के विभिन्न स्कूल (सम्प्रदाय) का उल्लेख भी इन शिलालेखों में है। इन सभी शास्त्रों का अध्ययन अध्यापन भी लोग करते थे। मनुको एक शिलालेख में कानून निर्माता कहा गया है तथा दूसरे शिलालेख में मनुसंहिता के अनेक पंक्तियाँ भी उसी रूप में लिखी गयी है। उन शिलालेखों में गौतम न्याय सूत्र तथा योगशास्त्र का भी उल्लेख है।

इन सभी शिलालेखों में पौराणिक कथाएँ मईथोलोजी कहानी, उपमा, उपमेय जो भारतीय संस्कृत साहित्य के काव्य शैली है उसका भी उदाहरण भरा पड़ा है।

इस प्रकार कम्बुज के संस्कृत शिलालेखों में उज्जवल संस्कृत साहित्य का वर्णन आया है। इसमें हमें उन प्रशस्तिकारों, कवियों विद्वानों तथा राजाओं का संस्कृत भाषा में रुचि तथा प्रवीणता का परिचय मिलता है। इन सभी राजाओं में जयवर्मण द्वितीय कम्बुज के यशोवर्मन जावा के भद्रवर्मन, इन्द्रब्रह्म देव सातवाँ और चम्पा के इन्द्रवर्मन तृतीय का नाम उल्लेखनीय है। वे सभी राजा संस्कृत भाषा तथा साहित्य में पूर्णतया प्रवीण थे।

उन सभी शिलालेखों तथा अन्य प्रमाणों के अध्ययन से यह साफ झलकता है कि संस्कृत भाषा राजकीय भाषा न्याय की भाषा कोर्ट की भाषा तथा विद्वानों की भी भाषा थी। परन्तु ~~न्याय की भाषा~~ यह कहना कठिन है कि स्थानीय भाषाओं के साथ संस्कृत भाषा का क्या सम्बन्ध था। फिर भी कु

ऐसा प्रमाण भी मिले हैं जिसमें स्थानीय भाषा का कुछ उद्धरण है। उन भाषाओं के अध्ययन से यह पता चलता है कि उसमें संस्कृत के शब्द भी मिश्रित थे।

इसमें कोई भी सन्देह की बात नहीं है कि संस्कृत भाषा के साथ-साथ स्थानीय भाषा भी विकसित थी। परन्तु वह संस्कृत के प्रभाव से बहुत प्रभावित थे। परन्तु काव्यों की रचना, विद्वान, संस्कृत में ही करते थे। इस तरह संस्कृत भाषा दक्षिण पूर्व एशिया में पूर्णतया विकास के चरम सीमा पर पहुँची हुयी थी।

[X]

Scanned with CamScanner